SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-02| December- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.25

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पर्यावरण प्रदूषण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन्

कमल कान्त गौतम[1] एवं डॉ० किरण सिंह[2]

[1]शोध–छात्र (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज
[2]शिक्षक–शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज
Email: kantkamal9085@gmail.com

सारांशः– भारत में ही नही पूरे विश्व में पर्यावरण प्रदूषण एक बहुत बड़ी समस्या है यह इतना तेजी से बढ़ता जा रहा है कि इसका अनुमान लगाना असम्भव है। जिसका मुख्य कारण जनसंख्या विस्फोट है। अपने आप को शहरीकरण बनाने के चक्कर में प्राकृतिक संसाधनों का अधाधुंध दोहन एवं दुरूपयोग करना जैसे– घरो मे फ्रीज, ए0सी0 व अन्य कारखाने चिमनी–भट्टी एवं उद्योग आदि शामिल है। जिसका प्रभाव पर्यावरण में पेड़–पौधें, जीव–जन्तु जल संसाधनों एवं शुद्ध वायु पर पड़ता है। जिससे उनका वृद्धि एवं विकास प्रभावित होता है। पर्यावरण प्रदूषण दूर करने के लिए राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु कई अधिनियम पारित किया गया है। जिससे पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्ति मिले। वर्तमान में भोगवादी सभ्यता ने विकास का जो रूप प्रस्तुत किया है उसी में पर्यावरण के विनाश के बीज छिपे है। मनुष्य अपनी–अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण प्रदूषण करने वाले नये–नये तकनीकों का विकास आये दिन करता रहा है। पर्यावरण शिक्षा का मकसद पर्यावरण के प्रति जागरूकता ही नही बल्कि पर्यावरण के अनुकूल कार्यवाही करना जिससे प्रदूषण मुक्त वातावरण हो। फल स्वरूप आज विश्व के विद्यालयों के प्रत्येक कक्षा के पुस्तकों में पर्यावरण शिक्षा एवं प्रदूषण का पाठ्यक्रम छात्र–छात्राओं को पढ़ना–पढ़ाना अवश्य शामिल किया गया है। जिससे प्रदूषण के नियंत्रण किया जा सके।

वृक्ष धरा के भूषण है

दूर करते प्रदूषण है

इसलिए सभी को विश्व प्रर्यावरण दिवस 5 जून को प्रति व्यक्ति को एक वृक्ष लगाना चाहिए।

मुख्य शब्द की वर्डः– पर्यावरण, प्रदूषण, अधाधुंध, संसाधन, अधिनियम एवं विस्फोट।

प्रस्तावनाः– मानव औद्योगिरण के विकास के चक्कर में प्रकृति के हरि–भरी एवं स्वच्छ पर्यावरण कत छवि को धूमिल करता रहा है अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए सदैव प्रकृति के साथ खेलता रहता है। आदि काल से ही भारत के भूमि पर प्रकृति के विभिन्न अंगो को ही देवतुल्य मानकर उनका सदैव पूजन करता रहा है। जिसका मुख्य कारण है कि हमारे पूर्वज सदा से ही पर्यावरण के प्रति शुद्धता के महत्व को भली–भॉति समझते थे। तभी वे सूर्य, चन्द्रमा, झील, झरने, नदियॉ

(गंगा यमुना), पहाड़ (गोवर्धन, हिमालय) वृक्ष (पीपल, बर्गद, नीम, तुलसी) और (गाय, बैल) को आदि काल से पूजते रहे है। जिससे वे संरक्षण एवं प्रदूषण अर्थात नष्ट होने से बचाते रहे है। वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति साकारात्मक दृष्टिकोण समस्त राष्ट्र का उचित जिम्मेदारी होनी चाहिए। क्योंकि जनसंख्या विस्फोट के साथ पर्यावरण में प्रदूषण का भी विस्फोट हो रहा है। जिससे नित्रंतण करना अति आश्यक है। नहीं तो फलस्वरूप पर्यारण में अधिक प्रदूषण से जलवायु एवं मौसम परिवर्तन होने से प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव होगा। जिसके दुष्प्रभाव से पृथ्वी पर जैविक एवं अजैविक घटकों पर प्रभाव पड़ेगा।

पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ :– पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है :–

पर्यावरण– पर्याय चारो ओर

आवरण = घिरा हुआ

इस प्रकार चारो ओर से घिरे आवरण को पर्यावरण कहते है।

प्रदूषण को अंग्रेजी में पालूशन (Pollution) कहा जाता है पालूशन (Pollution) शब्द लैटिन भाषा के पोलुएर (Polleuere) शब्द से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है गंदा करना या अपवित्र करना है। 19वीं सदी के आधुनिक उपयोग से लगभग 1860 के दशक के बाद इसका प्रयोग आद्योगिक धूएँ और हानिकारक पदार्थों से पर्यावरण दूषित होने के सम्बन्ध में उपयोग होने लगा।

पर्यावरण प्रदूषण के परिभाषाः– पर्यावरण में उपस्थित जैविक एवं अजैविक घटकों पर होने वाले अनैक्षिक प्रभाव को पर्यावरण प्रदूषण कहते है। जैसे–ओजोन परत मे छीद्र होने से अल्ट्रा वायलेट किरणें पृथ्वी पर पड़ती है आये दिन नये कारखानें एवं तकनीकों का उपयोग से जल, जंगल, जमीन, वायु एवं मृदा प्रदूषित होते है।

पर्यावरण प्रदूषण की नियंत्रण एंव रोक–थामः– पर्यावरण प्रदूषण आज के समय की सबसे गम्भीर चुनौतियों में से एक है। इसे नियंत्रण करना न केवल प्रकृति के लिए बल्कि मानव अस्तित्व के लिए भी अनिवार्य है। प्रदूषण को रोकने के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक और सरकारी स्तर पर समंवित प्रयासों की आवश्यकता है।

1–वायु प्रदूषण का नियंत्रण

- वायु की गुणवत्ता सुधारने के लिए हानिकारक गैसों और कणों के उत्सर्जन को कम करना आवश्यक है।
- नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोगः कोयला और पेट्रोलियम के बजाय सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल विद्युत का उपयोग बढ़ाना चाहिए।
- वाहनों पर नियंत्रणरू सीएनजी (CNG) और इलेक्ट्रिक वाहनों (EVS) को बढ़ावा देना। सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करना।
- औद्योगिक फिल्टर– कारखानों की चिमनियों में इलेक्ट्रोस्टैटिक प्रेसिपिटेटर्स और फिल्टर का उपयोग करना ताकि जहरीली गैसें हवा में न मिलें।

2–जल प्रदूषण की रोकथाम

- जल स्रोतों को बचाने के लिए अपशिष्ट प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण है।
- सीवेज ट्रीटमेंटरू शहरों के गंदे पानी और औद्योगिक कचरे को नदियों में बहाने से पहले उसे उपचारित (Treat) करना चाहिए।

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

- प्लास्टिक पर रोकः नदियों और समुद्रों में प्लास्टिक फेंकने पर सख्त पाबंदी होनी चाहिए।
- कृषि सुधारः खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के बजाय जैविक खाद (Organic Farming) का उपयोग करना।

3–मृदा मिट्टी प्रदूषण का नियंत्रण

- मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जरूरी है।
- 3R सिद्धांतः कम उपयोग (Reduce), पुनः उपयोग (Reuse) और पुनर्चक्रण (त्मबलबसमद्ध की नीति अपनाना।
- अपशिष्ट पृथक्करणः सूखे और गीले कचरे को अलग–अलग करना ताकि उनका सही निपटान हो सके।
- वृक्षारोपणः अधिक से अधिक पेड़ लगाना, जिससे मिट्टी का कटाव रुके और उसकी गुणवत्ता बनी रहे।

4–ध्वनि प्रदूषण में कमी

- साइलेंसर का उपयोगः मशीनों और वाहनों में उच्च गुणवत्ता वाले साइलेंसर लगाना।
- हॉर्न पर नियंत्रणः अस्पतालों और स्कूलों के पास श्नो हॉर्न जोनश का सख्ती से पालन करना।
- ध्वनि अवरोधकः सड़कों के किनारे घने पेड़ लगाना, जो ध्वनि को सोखने का काम करते हैं।

5–सरकारी और कानूनी प्रयास

- प्रदूषण नियंत्रण के लिए केवल व्यक्तिगत प्रयास काफी नहीं हैं, इसके लिए सख्त नियमों की आवश्यकता है –
- सख्त कानूनः पर्यावरण संरक्षण अधिनियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करना।
- जागरूकता अभियानरू जन–साधारण को प्रदूषण के खतरों और बचाव के तरीकों के प्रति शिक्षित करना।
- कार्बन टैक्सरू अधिक प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर भारी जुर्माना या टैक्स लगाना।

6–ओजोन परत का क्षरण (Depletion)

- पिछले कुछ दशकों में मानवीय गतिविधियों के कारण ओजोन परत पतली हुई है, जिसे श्ओजोन छिद्रश कहा जाता है।
- मुख्य कारकः क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFCs), जो पुराने एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर और स्प्रे कैन से निकलते हैं।
- प्रभावः ओजोन परत पतली होने से UV किरणें सीधे धरती तक पहुँच रही हैं।
- संरक्षणरू 1987 में श्मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल नामक अंतर्राष्ट्रीय समझौता किया गया, ताकि ओजोन को नुकसान पहुँचाने वाले रसायनों पर रोक लगाई जा सके।
- महत्वपूर्ण तथ्यः प्रतिवर्ष 16 सितंबर को श्विश्व ओजोन दिवसश मनाया जाता है।

7–प्रदूषण के प्रमुख कारण

- औद्योगिकीकरण– कारखानों से निकलने वाला ज़हरीला धुआँ और कचरा।
- वनों की कटाई– पेड़ों की कमी से ऑक्सीजन का स्तर गिरना और कार्बन डाइऑक्साइड का बढ़ना।
- बढ़ती जनसंख्याः अधिक संसाधनों का उपयोग और कचरे का बढ़ना।

प्लास्टिक का उपयोगरू प्लास्टिक का नष्ट न होना और पर्यावरण में सालों तक बने रहना।

इसे कैसे रोका जा सकता है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

पेड़ लगानाः अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना।

3j का नियमरू रिड्यूस (कम उपयोगद्ध, रीयूज (पुनः उपयोगद्ध और रीसाइकिल (पुनर्चक्रण)।

स्वच्छ ऊर्जा– सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे विकल्पों को अपनाना

जागरूकता अभियानः जन–साधारण को प्रदूषण के खतरों और बचाव के तरीकों के प्रति शिक्षित करना। कार्बन टैक्सः अधिक प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर भारी जुर्माना या टैक्स लगाना। पर्यावरण की रक्षा करना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। छोटे–छोटे बदलाव, जैसे कि प्लास्टिक का त्याग करना और पेड़ लगाना, भविष्य के लिए एक बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं। क्या आप चाहते हैं कि मैं प्रदूषण के किसी विशिष्ट प्रकार (जैसे वायु या जल प्रदूषण) पर विस्तार से जानकारी दूँ या इसके लिए एक प्रोजेक्ट रूपरेखा (Outline) तैयार करूँ? वृक्षारोपणः अधिक से अधिक पेड़ लगाना। सिद्धांत Reduce (कम करना), Reuse (पुनः उपयोग), और Recycle (पुनर्चक्रण) को अपनाना। सौर ऊर्जा सौर और पवन ऊर्जा जैसे स्वच्छ ईंधन का उपयोग करना। जागरूकताः लोगों को पर्यावरण के महत्व के बारे में शिक्षित करना। पर्यावरण प्रदूषण केवल एक देश की समस्या नहीं, बल्कि एक वैश्विक संकट है। यदि हम आज सचेत नहीं हुए, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ जीवन जीना कठिन हो जाएगा। क्या आप प्रदूषण के किसी विशिष्ट प्रकार (जैसे प्लास्टिक प्रदूषण) पर विस्तार से जानकारी चाहते हैं या इसके समाधान के सरकारी प्रयासों के बारे में जानना चाहेंगे? प्रदूषण के स्रोत वे स्थान, गतिविधियाँ या कारक हैं जिनसे हानिकारक पदार्थ हमारे पर्यावरण (हवा, पानी, मिट्टी) में प्रवेश करते हैं। प्रदूषण के स्रोतों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता हैरू

1. मानव–निर्मित स्रोत

आज के समय में अधिकांश प्रदूषण मानवीय गतिविधियों का परिणाम हैरू

- **औद्योगिक गतिविधियाँ.** कारखानों से निकलने वाला धुआं, जहरीले रसायन और कचरा वायु और जल प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है।
- **परिवहन:** कारों, ट्रकों और विमानों से निकलने वाली गैसें (जैसे कार्बन मोनोऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड)।
- **कृषि:** रसायनिक उर्वरकों (थ्मतजपसप्रमते) और कीटनाशकों (Pesticide) का उपयोग, और पराली जलाना।
- **शहरीकरण और कचरा:** शहरों का सीवेज प्लास्टिक कचरा, और डंपिंग ग्राउंड में कचरा जलाना।
- **ऊर्जा उत्पादन:** बिजली बनाने के लिए कोयले और पेट्रोलियम जैसे जीवाश्म ईंधन का जलना।

2. प्राकृतिक स्रोत

कुछ प्रदूषण प्राकृतिक घटनाओं के कारण भी होता है:

ज्वालामुखी विस्फोट: इससे बड़ी मात्रा में राख और हानिकारक गैसे निकलती हैं।

जंगलों की आग (Forest Fires): इससे भारी मात्रा में धुआं और कार्बन कण हवा में मिल जाते हैं।

धूल भरी आँधियाँ: मरुस्थलीय क्षेत्रों में हवा के साथ उड़ने वाली धूल वायु गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

जैविक अपघटन: मृत पौधों और जानवरों के सड़ने से निकलने वाली गैसें (जैसे मीथेन)।

हालिया रिपोर्टों (2025–26) के अनुसार, दिल्ली जैसे बड़े शहरों में वायु प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत PM2.5 और PM10 जैसे सूक्ष्म कण हैं, जो सड़क की धूल और निर्माण कार्यों से सबसे अधिक पैदा होते हैं।

निष्कर्ष :–

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

प्रदूषण के प्रभाव स्वास्थ्य पर असरः सांस की बीमारियाँ, कैंसर और त्वचा संबंधी रोग। ग्लोबल वार्मिंगः तापमान बढ़ने से ग्लेशियरों का पिघलना और जलवायु परिवर्तन। पारिस्थितिकी तंत्रः कई जीव–जंतुओं और पौधों की प्रजातियों का विलुप्त होना। प्रदूषण आज के समय की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। इसे रोकने के लिए हमें अधिक पेड़ लगाने चाहिए, प्रदूषण फैलाने वाले ईंधनों के बजाय सौर ऊर्जा जैसे स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को अपनाना चाहिए और 3R (Reduce Reuse Recycle) के नियम का पालन करना चाहिए। क्या आप प्रदूषण के किसी विशिष्ट प्रकार (जैसे वायु या जल प्रदूषण) के बारे में विस्तार से जानना चाहेंगे? प्रदूषण नियंत्रण के लिए केवल व्यक्तिगत प्रयास काफी नहीं हैं, इसके लिए सख्त नियमों की आवश्यकता है– सख्त कानूनः पर्यावरण संरक्षण अधिनियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. गोयल, एम0के0 (2005). पर्यावरण शिक्षा विनोद पुस्तक–आगरा।
2. कपिल, एच0के0 (2007). अनुसंधान विधियाँ व्यवहार परक विज्ञानों में भार्गव बुक हाउस आगरा।
3. कुमार ए0 (2008). शैक्षिक शोध की पद्धतियां। शशी गाइड्स यूनिवर्सिटी पब्लिकेशनः जयपुर।
4. गोयल, के0बी0 (1981) सांख्यिकी की विधियाँ। अजमेर बुक कम्पनीरू जयपुर।
5. पाण्डेय, के0पी0 (1995). शिक्षा में कियात्मक अनुसंधान। अभिताभ प्रकाशनरू मेरठ।
6. मंगल, डा० अंशु० (2005). शैक्षिक अनुसंधान की गतिविधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी। रूधा प्रकाशन आगरा।

7-Garrett] H-E- (2005)- "Statistics in Education and

8-Psychology Paryavaran International Publication: New Delhi-

9-Goach] G-K- (1994) Environment and Development Ashish Publishing: New Delhi-c

10-Buch] M-B- (1983-1991) Fourth Survey of Research in Education: NCERT-

Cite this Article:

कमल कान्त गौतम[1] एवं डॉ० किरण सिंह[2],“ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पर्यावरण प्रदूषण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन्

” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 02, pp.173-177, December 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

कमल कान्त गौतम एवं डॉ० किरण सिंह

For publication of research paper title

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पर्यावरण प्रदूषण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन्

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-02, Month December 2025, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.25